



सलोकु ॥
संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार ॥13॥





असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥





संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥





संत का निंदकु महा अतताई ॥

संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥

संत का निंदकु महा हतिआरा ॥

संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥

संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥

संत के निंदक कउ सरब रोग ॥


संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥

संत की निंदा दोख महि दोखु ॥


नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु


॥३॥







संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥
संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥
संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥







संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहुँचै ॥
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥






संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥
संत का दोखी छुटै इकेला ॥
जिउ बूआडु तिलु खेत माहि दुहेला ॥
संत का दोखी धरम ते रहत ॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥





संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥





सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥

सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥

प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥

तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥

सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥

जैसा करे तैसा को थीआ ॥

अपना खेलु आपि करनैहारु ॥

दूसर कउनु कहै बीचारु ॥

जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥

बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

